Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.04, No.10, October, 2025
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

Knowledgeable Research
ISSN 2583-6633
Vol.04, No.10, October,2025
http://knowledgeableresearch.com/

सल्तनत काल में भारत की धार्मिक स्थिति का तत्थात्मक मूल्यांकन

डॉ. अन्शु मंगल
राधा गोविन्द विष्वविद्यालय,
रामगढ़, झारखण्ड
Email: dranshumangal@gmail.com

****

Abstract: मध्यकालीन भारत में दिल्ली सल्तनत के दौरान इस्लामी शासन ने भारतीय धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर गहरा प्रभाव डाला। एकेश्वरवाद पर आधारित इस्लाम के साथ सूफीवाद का उदय हुआ, जिसने प्रेम, आत्मशुद्धि और आध्यात्मिक समर्पण पर बल दिया। निजामुद्दीन औलिया तथा अमीर खुसरो जैसे सूफी संतों ने सांस्कृतिक समन्वय और जनभाषा के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसी काल में भक्ति आंदोलन का विकास हुआ, जिसने जाति-भेद, कर्मकांड और सामाजिक जटिलताओं का विरोध करते हुए भक्ति को सरल मार्ग के रूप में प्रस्तुत किया। कबीर जैसे संतों ने हिंदू-मुस्लिम एकता और मानव समानता का संदेश दिया। इस्लामी और हिंदू परंपराओं के परस्पर संपर्क से एक मिश्रित 'इंडो-इस्लामिक' संस्कृति का विकास हुआ, जो भाषा, साहित्य, संगीत और सामाजिक जीवन में स्पष्ट दिखाई देता है। उर्दू भाषा का उदय तथा जनभाषाओं में रचित भक्ति साहित्य इस सांस्कृतिक समन्वय के प्रमुख उदाहरण हैं। यद्यपि इस काल में धार्मिक तनाव भी विद्यमान रहे, तथापि व्यापक स्तर पर सांस्कृतिक संवाद और सहअस्तित्व की प्रवृत्ति ने भारतीय सभ्यता को बहुलतावादी स्वरूप प्रदान किया।

Keywords: *मध्यकालीन भारत, सूफीवाद, भक्ति आंदोलन, इंडो-इस्लामिक संस्कृति, धार्मिक समन्वय.*

****

निविर्वादित रूप से मध्य युग में इस्लामी शासन मजहबी था तथा धार्मिक इतिहास में इस्लाम का महत्वपूर्ण स्थान था।1 दिल्ली सल्तनत के शासन में धार्मिक स्थिति में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का अनुभव हुआ है। उनकी अवधि के शुरुआती वर्षों में, भारत में सभी प्राचीन धार्मिक प्रतिष्ठान, जैसे कि वैदिक धर्म, हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, वैष्णववाद, शैववाद, और इसी तरह, कई मायनों में फले-फूले। फिर भी समय के साथ, कई धर्मों का पतन या समूह ज्यादातर भारत के क्षेत्रों में हुआ है। बहुसंख्यक

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.04, No.10, October, 2025
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

मुसलमान सुन्नी और शिया हैं। इस अवधि की नवीनता मुसलमानों के बीच सूफीवाद का बढ़ता उदय और सभी हिंदुओं के बीच भक्ति आंदोलन था। इसमें कोई शक नहीं है कि सूफीवाद का जन्म इस्लाम से हुआ था।2 सूफीवाद एक प्राचीन विश्वास धर्म है जो दिल्ली सल्तनत के उदय से पहले भारत में पहुंच गया था। जब भारत में मुसलमानों की मजबूती से स्थापना हुई, सूफीवाद ने कर्षण प्राप्त किया। अनगिनत सूफी संत भारत आए हैं और दुनिया के विभिन्न हिस्सों में रहे हैं। सूफीवाद भारतीयों के बीच प्रचलित धार्मिक विचारों से प्रभावित थाः अल्लाह के प्रति सम्मान, अहिंसा, आत्म नियंत्रण, आदि भारत में हिंदुओं, बौद्धों और जैनियों के लोकप्रिय गुण रहे हैं। सूफीवाद के विचार के तरीके में एक ईश्वर में विश्वास है और प्रत्येक मनुष्य और अन्य सभी को इसका हिस्सा बनने के लिए पाता है। वस्तुतः सूफी समर्पित मुसलमान थे जिन्होंने शरीयत से परे काम किया और इसे बहाल करने का एकमात्र रास्ता पाया। वस्तुतः कुरान एवं पैगम्बर से प्रेरणा ली और व्यक्ति के अहम् की षुद्धिकरण पर जोर दिया।3 पवित्र सूफी लोगों का जीवन सादा था, या यहाँ तक कि एक उदार स्वभाव, और सभी मानवीय संपत्तियों और खुशियों के त्याग का भंडार था। उन्हें किसी भी प्रकार की पूजनीय छवि पर भरोसा नहीं था। हमने मसीह को देखभाल करने वाला और दयालु माना, और हम उससे नफरत नहीं करते थे, लेकिन उससे डरते थे। वस्तुतः उन्होंने कट्ठरपंथी इस्लाम से इस्लाम का सरल रूप दे दिया।4 उन्होंने प्रेम को मानव का मुख्य विरोधी पाया, और इस प्रकार उन्होंने इसे आत्मसमर्पण करना शुरू कर दिया। कारीगरी ने उन्हें उस पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया, और उन्होंने मसीह की परीक्षा करते समय संगीत और आनंद के संकेत में भाग लिया। सूफी गुरु नानक ने गुरु (गुरु) का न्याय किया, जिन्हें वे पीर कहते थे और वादा किया था कि कोई भी गुरु के मार्गदर्शन के बिना भगवान की कोशिश नहीं करेगा। सूफी अलग-अलग समूहों का हिस्सा थे, सुरवर्दी आदेश और चिश्ती डिवीजन सामान्य महत्व का था। सुरवर्दी मत की ताकत केवल सिंध, पंजाब और मुल्तान तक ही सीमित रही, लेकिन चिश्ती मत को पंजाब, राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार, बंगाल, उड़ीसा और दक्षिण भारत सहित पूरे

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.04, No.10, October, 2025
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

भारत में व्यापक रूप से माना जाता था। कुछ पवित्र सूफी लोग दिल्ली सल्तनत काल के दौरान काफी लोकप्रिय थे। उनमें से सबसे प्रभावशाली थे शेख मुइन-उद-हंगामा चिश्ती, बाबा फरीद-उद-नॉइस, नसीर-उद-क्लॉमर महमूद, निजाम-उद-रैकेट औलिया, ख्वाजा शेख तकी-उद-हंगामा, और मलिक मुहम्मद जायसी। भक्ति आन्दोलन, भक्ति शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के भज शब्द से हुई हैं, जिसका अर्थ हैं भजना अथवा उपासना करना हैं।

जब व्यक्ति सांसारिक कार्यों से विरक्त होकर एकांत में तन्मयता के साथ ईश्वर का स्मरण करता हैं, तो उसे भक्ति कहा जाता हैं एवं भक्ति करने वाले को भक्त कहा जाता हैं। भारत में भक्ति आंदोलन की शुरुआत बाहरवी शताब्दी के लगभग दक्षिण भारत में हुई। इससे संबंध संत आलवार (विष्णु भक्त) तथा नायनार या अड्यार (शिव भक्त) कहे जाते थे।

भक्ति आंदोलन के संतों ने जातिवाद की निंदा की, कर्मकांडों तथा यज्ञों का परित्याग करने पर बल दिया, महिलाओं के सशक्तिकरण पर बल दिया तथा आम बोलचाल की भाषा में लोगों तक अपने संदेश पहुचाएं। उत्तर मध्य भारत में महाराष्ट्र में सर्वप्रथम भक्ति आंदोलन का उदय हुआ। भारत में भक्ति की परम्परा अनादि काल से चली आ रही हैं। कहा जाता हैं कि भक्ति परम्परा का प्रचलन महाभारत के समय भी था। जब गीता में अर्जुन से भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि तुम सभी धर्मों को छोड़कर मेरी शरण में आ जाओं, तब अर्जुन को भगवान श्री कृष्ण भक्ति मार्ग पर चलने का उपदेश दे रहे होते हैं। यदि भक्त सच्चे मन से भक्ति करे तो ईश्वर कई रूपों में भक्त को मिल सकता हैं। भक्ति के लिए ईश्वर के कई रूप देखने को मिलते हैं। कहीं मनुष्य के रूप में तो कही प्रकृति के विविध रूपों में। भक्ति आंदोलन के उदय के कारण हमारे देश में भक्ति आन्दोलन के उदय के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे-

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.04, No.10, October, 2025
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

1. शासकों के अत्याचार- हिन्दुओं पर मुस्लिम आक्रमणकारियों ने तरह तरह के अत्याचार किये। हिन्दुओं को उन्होंने बड़ी संख्या में मौत के घाट उतार दिया और हजारों हिन्दुओं को मुस्लिम धर्म स्वीकार करने के लिए मजबूर कर दिया और हजारों हिन्दुओं को मुस्लिम धर्म को स्वीकार करने के लिए मजबूत कर दिया। इस कारण से हिन्दुओं के ह्रदय में निराशा का संचार हुआ, परन्तु इसी समय भक्ति आंदोलन के प्रादुर्भाव से हिन्दुओं में प्रभु आराधना फिर से उत्तपन्न हुई और हिन्दुओं में फिर से ईष्वर के प्रति आस्था व प्रेम का संचार हुआ।

2. आश्रय की खोज- इस काल में युग में हिन्दू अपनी राजनैतिक स्वतंत्रता खोकर पूर्ण रूप से इस्लामी शिकंजे में फंस चुके थे। वे ऐसे समय पराधीनता के बंधन से मुक्त होने के लिए नये मार्ग की तलाश में थे। उन्हें वह मार्ग भक्ति आंदोलन के रूप में प्राप्त हुआ।

3. सरल मार्ग - इस काल में धार्मिक विचारकों ने भक्ति मार्ग का प्रतिपादन किया, जो अद्वैतवाद की अपेक्षा सरल था।

4. वैदिक धर्म की जटिलता - वस्तुत इस काल में वैदिक धर्म व ब्राह्मणवाद की शिक्षाएँ अव्यावहारिक होने के साथ साथ सिद्धांतों पर आधारित थीं जो जनसाधारण की समझ के बाहर थी, इसके अतिरिक्त इस धर्म में आडम्बरों और कर्मकांडों का ही बोलबाला था। इस कारण से जनता वैदिक धर्म से उब गई थी। ऐसी परिस्थिति में प्रेम मिश्रित ईश्वर भजन के आंदोलन को प्रोत्साहन मिला।

5. नवीन मार्ग की खोज की आवश्यकता - सल्तनतकालीन साम्राज्य में हिन्दुओं की प्रगति के मार्ग में अवरुद्ध हो गये थे। परिणामस्वरूप हिन्दुओं में निष्क्रियता छाई। हिन्दुओं को ऐसे समय में नये मार्ग की खोज की आवश्यकता थी। इस प्रकार से उन्होंने भगवत भजन और आत्म चिंतन का मार्ग ढूंढ निकाला, जिसके माध्यम से उन्होंने काफी शक्ति संचित की।

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.04, No.10, October, 2025
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

6. धर्म और समाज की जटिलता - सल्तनतकालीन समय में हिन्दू धर्म और समाज अनेक कुरीतियों, आडम्बरों एवं अंधविश्वासों का शिकार बना हुआ था। इसके अतिरिक्त समाज में जाति पांति की जटिलता बहुत अधिक बढ़ गई थी, तथा शूद्रों की स्थिति अत्यंत शोचनीय हो गई थी, इस कारण से अनेक धार्मिक चिंतकों व समाज सुधारकों ने भक्ति आंदोलन का प्रतिपादन कर धार्मिक व सामाजिक जटिलताओं को दूर करने का प्रयास किया गया।इस समय भारतीय समाज एवं संस्कृति में उत्पन्न हुई इस हलचल को शान्त करने के लिए अनेक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष स्थितियाँ उत्पन्न हुई। भक्ति आन्दोलन में इस काल में प्रर्वतकों के माध्यम से, मुस्लिम कवियों की उदार नीति, सूफी सन्तों द्वारा, अकबर एवं दाराशकोह के माध्यम से इस हलचल एवं अशान्त स्थिति को शान्त करके हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रयास किया गया। महान भक्ति संत कबीरदास जी हिन्दुओं एवं मुसलमानों दोनों को वस्तुस्थिति से अवगत कराने के लिए अपने दोहों के माध्यम से समय-समय पर सचेत किया तथा बताया कि राम और रहीम एक है, उन्हें पृथक-पृथक मानना मूर्खता है। उनके अनुसार-हिन्दू कहैं मोहि राम पिआरा तुरक कहैं रहमान। आपस में दोऊ लड़ि-लड़ि मूये, मरम ने कोई जाना।।

5 भक्ति आन्दोलन के अन्य सन्तों में दादू, सुन्दर दास तथा मलूकदास के हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रयास भी सराहनीय हैं। जैसे कि दादू ने लिखा हैःदोनों भाई हाथ, पग, दोनों भाई करन। दोनों भाई नैन हैं, हिन्दू-मुस्लमान।।

6 मुसलमान कवियों ने सल्तनत काल से लेकर मुगल-काल तक हिन्दू कविता के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से हिन्दू-मुस्लिम एकता का मार्ग प्रषस्त किया है। मुस्लिम कवियों में अमीर खुसरो, अब्दुर्रहीम खानखाना। इसके अतिरिक्त रसखान तथा षेख मुबारक का नाम विषेष है। प्रसिद्ध चिष्ती सूफी संत निजामुद्दीन औलिया के प्रमुख षिष्य अमीर खुसरो ने फारसी के स्थान पर हिन्दी को अधिक महत्व दिया। अमीर खुसरो ने अपनी पुस्तक “गुर्रत-उल-इस्लाम’ में लिखा है-” मैं भारतीय तुर्क हूँ और तुम्हे हिन्दी में उत्तर दे सकता हूँ.... चूँकि मैं हिन्द का तोता हूँ, इस कारण हिन्दी में मुझसे पूछा ताकि मैं

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.04, No.10, October, 2025
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

मीठी बात कर सकूँ।7वस्तुतः इसी प्रकार से प्रकार तीव्र झझांवतों के मध्य उपरोक्त सन्तों के सराहनीय प्रयासों के परिणामस्वरूप सल्तनतकालीन भारत में सांस्कृतिक सामंजस्य स्थापित हुआ तथा समकालीन भारत पर इसका पूर्ण प्रभाव पड़ा तथा भारत में एक नवीन मिश्रित संस्कृति का जन्म हुआ।तत्कालीन भारतीय संस्कृतिवास्तविक रूप से इस्लाम में एकेश्वरवाद ने हिंदुओं के बीच एक समानांतर प्रवृत्ति के निर्माण में योगदान दिया है। भक्ति आन्दोलन भी प्रतीकात्मक रूप से इस्लाम से प्रभावित थी। कबीर सभी इस्लामी कलाओं के सबसे प्रभावशाली व्यक्ति थे, चित्रकला और शिल्प कौशल में एक निश्चित मौलिकता थी जो समृद्ध थी भारतीय संस्कृति की संरचना सांस्कृतिक क्षेत्र में, उर्दू भाषा का विकास और ऐतिहासिक लेखन का प्रकाशन किसके द्वारा किए गए स्मारकीय योगदान का हिस्सा है? भारतीय संस्कृति के लिए मुसलमान - पहनावे, तौर-तरीकों और पोषण, विशेष रूप से उत्तरी भारत में कुलीनों के बीच, मुसलमानों को देखकर उसी पुनर्मूल्यांकन को लागू किया।धार्मिक स्थितिदिल्ली सल्तनत में धार्मिक स्थिति उनकी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण पहलू थी। सल्तनत युग के बाद से, वैदिक धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, वैष्णववाद, शैववाद या कई तांत्रिक संप्रदायों सहित भारत में सबसे प्राचीन सांस्कृतिक परंपराएं विभिन्न रूपों में विकसित हुईं। इसके अतिरिक्त इनका रूप भी अत्याधिक परिवर्तित हुआ।

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, डॉ. के.एल. खुराना, पृ. सं. : 81
2. **Yusuf Hussain, Glimpses of Medieval Indian Culture, Ioc, p. 33**
3. **Mir Valiuddin, Suffi Movement In India, 1958**
4. मध्यकालीन भारत का वृहत् इतिहास, डॉ. जे,एल, मेहता, पृ. सं. : 250

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.04, No.10, October, 2025
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

5. मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, डॉ. के.एल. खुराना, पृ. सं. : 260

6. वही, पृ. सं. 261

7. वही, पृ. सं. 146